



## भाषाई विविधता और विलुप्त होती भाषाएं

**डॉ० अनुपम अग्रवाल**

Email: [anupamagarwal1979@gmail.com](mailto:anupamagarwal1979@gmail.com)

**डॉ० नीलम यादव**

Email: [dr.neelam2012.yadav@gmail.com](mailto:dr.neelam2012.yadav@gmail.com)

### प्रस्तावना

भाषाई विविधता मानव समाज की एक अनमोल धरोहर है जो विभिन्न संस्कृतियों, परंपराओं और ज्ञान का प्रतिनिधित्व करती है। यह विविधता न केवल संप्रेषण के साधन के रूप में कार्य करती है बल्कि मानव अनुभवों, सोच और सामाजिक ताने-बाने को भी आकार देती है। भाषाई विविधता का महत्व कई आयामों में देखा जा सकता है, जैसे कि सांस्कृतिक पहचान, ज्ञान का संरक्षण, सामाजिक जुड़ाव, और आर्थिक विकास।

दुनिया भर में भाषाओं की विविधता तेजी से घट रही है, और यह चिंता का विषय है क्योंकि भाषाओं के विलुप्त होने से संबंधित समुदायों की सांस्कृतिक और बौद्धिक धरोहर भी खो जाती है। यूनाइटेड नेशंस एजुकेशनल, साइंटिफिक एंड कल्चरल ऑर्गनाइजेशन (यूनेस्को) के अनुसार, हर दो सप्ताह में एक भाषा विलुप्त हो जाती है। भाषाओं के विलुप्त होने के प्रमुख कारणों में वैश्वीकरण, शहरीकरण, शिक्षा और प्रशासन में प्रमुख भाषाओं का वर्चस्व, और प्रवासन शामिल हैं।

वैश्वीकरण ने कुछ प्रमुख भाषाओं का प्रभुत्व बढ़ाया है, जिससे स्थानीय भाषाओं का महत्व घट गया है। शहरीकरण के कारण लोग अपनी मातृभाषाओं को छोड़कर प्रमुख भाषाओं की ओर रुख करते हैं। शिक्षा और प्रशासन में प्रमुख भाषाओं के उपयोग से अन्य भाषाओं का प्रयोग कम हो जाता है। प्रवासन के कारण लोग नई भाषाओं को अपनाते हैं और उनकी मातृभाषा विलुप्त हो जाती है।

भाषाओं के संरक्षण और संवर्धन के लिए कई उपाय किए जा सकते हैं। शिक्षा प्रणाली में सुधार कर स्थानीय भाषाओं को शामिल करना, सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन, सरकारी नीतियों का निर्माण, और डिजिटल

प्लेटफॉर्म पर स्थानीय भाषाओं के लिए सामग्री उपलब्ध कराना शामिल हैं। इन उपायों के माध्यम से हम भाषाई विविधता को संरक्षित कर सकते हैं और विलुप्त होती भाषाओं को बचा सकते हैं।

संक्षेप में, भाषाई विविधता की सुरक्षा और संवर्धन के लिए एक समग्र दृष्टिकोण आवश्यक है। इसके लिए सामुदायिक, राष्ट्रीय और वैश्विक स्तर पर समन्वित प्रयास जरूरी हैं। भाषाओं का संरक्षण न केवल हमारी सांस्कृतिक धरोहर को सुरक्षित रखेगा बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए भी एक समृद्ध विरासत छोड़ जाएगा।

## भाषाई विविधता

भाषाई विविधता का तात्पर्य विभिन्न भाषाओं और बोलियों के अस्तित्व से है जो एक निश्चित क्षेत्र, समुदाय या देश में पाई जाती हैं। यह विविधता न केवल संप्रेषण को सुगम बनाती है बल्कि सांस्कृतिक धरोहर को भी सुरक्षित रखती है। भाषा मानव समाज की सबसे महत्वपूर्ण विशेषताओं में से एक है, जो हमारी सांस्कृतिक पहचान, सामाजिक संरचना, और इतिहास को परिभाषित करती है। भाषाएं हमारे विचारों, अनुभवों और भावनाओं को व्यक्त करने का प्रमुख माध्यम हैं, और वे हमारे जीवन के हर पहलू में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

भाषाई विविधता का विकास हजारों वर्षों में हुआ है। प्राचीन सभ्यताओं से लेकर आधुनिक समाजों तक, भाषाएं विभिन्न सांस्कृतिक, सामाजिक और आर्थिक कारकों से प्रभावित होती रही हैं। प्रत्येक भाषा अपने साथ एक अनूठी सांस्कृतिक पहचान और इतिहास लेकर आती है। विभिन्न भाषाओं का विकास और उनका परस्पर प्रभाव समाज के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

## भाषाई विविधता का महत्व

भाषाई विविधता मानव समाज की एक अनमोल धरोहर है जो हमारी सांस्कृतिक, सामाजिक और ऐतिहासिक पहचान को प्रतिबिंबित करती है। यह विविधता न केवल विभिन्न भाषाओं और बोलियों के अस्तित्व को सुनिश्चित करती है, बल्कि यह हमारे समाज के विभिन्न पहलुओं को भी प्रभावित करती है। भाषाई विविधता का महत्व निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से समझा जा सकता है:

### 1. संस्कृति और पहचान

भाषाएं किसी भी संस्कृति की रीढ़ होती हैं। वे हमारे विचारों, भावनाओं, परंपराओं और रीति-रिवाजों को व्यक्त करने का प्रमुख माध्यम हैं। प्रत्येक भाषा एक विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान को दर्शाती है और उसके समुदाय के इतिहास, विश्वासों और जीवन शैली को संरक्षित करती है।



- **संस्कृति का संचार:** भाषाएं सांस्कृतिक धरोहर को पीढ़ी दर पीढ़ी प्रेषित करती हैं। कहावतें, लोकगीत, कथा-कहानियाँ और प्राचीन ग्रंथों के माध्यम से संस्कृति का संचार होता है।
- **सांस्कृतिक विविधता का सम्मान:** भाषाई विविधता विभिन्न सांस्कृतिक समूहों के बीच सम्मान और समझ को बढ़ावा देती है। यह सामाजिक समरसता और सहिष्णुता को बढ़ाती है।

## 2. ज्ञान का संरक्षण

भाषाओं में पारंपरिक ज्ञान, विज्ञान, चिकित्सा और कृषि की विधियों का संरक्षण होता है। जब कोई भाषा विलुप्त हो जाती है, तो उस भाषा में संग्रहित ज्ञान भी खो जाता है।

- **पारंपरिक ज्ञान का संरक्षण:** अनेक पारंपरिक चिकित्सा प्रणालियाँ, जैसे आयुर्वेद और सिद्ध चिकित्सा, प्राचीन भाषाओं में संरक्षित हैं। इन भाषाओं के संरक्षण से यह ज्ञान सुरक्षित रहता है।
- **स्थानीय विशेषज्ञता:** स्थानीय भाषाओं में संग्रहित कृषि और पर्यावरणीय ज्ञान स्थानीय समुदायों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह ज्ञान प्राकृतिक संसाधनों के स्थायी उपयोग में सहायक होता है।

## 3. सामाजिक जुड़ाव

भाषाई विविधता सामाजिक जुड़ाव और समुदायों के बीच सामंजस्य को बढ़ावा देती है। विभिन्न भाषाओं का उपयोग समुदायों के बीच संवाद को सुगम बनाता है और आपसी समझ को बढ़ाता है।

- **समुदायों के बीच समरसता:** विभिन्न भाषाओं का उपयोग सामाजिक एकता को बढ़ाता है और विभिन्न सांस्कृतिक समूहों के बीच सहयोग को प्रोत्साहित करता है।
- **सामाजिक पहचान:** भाषाएं सामाजिक पहचान को सुदृढ़ करती हैं और व्यक्तिगत और सामुदायिक पहचान के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

## 4. शिक्षा और मानसिक विकास

स्थानीय भाषाओं में शिक्षा प्राप्त करना बच्चों के मानसिक और शैक्षिक विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह उनकी सीखने की प्रक्रिया को सरल और प्रभावी बनाता है।

- **मातृभाषा में शिक्षा:** शोध से पता चला है कि मातृभाषा में प्रारंभिक शिक्षा बच्चों की बौद्धिक क्षमता को बढ़ाती है और उनकी समझ को गहरा करती है।
- **शैक्षिक उपलब्धि:** मातृभाषा में शिक्षा प्राप्त करने वाले बच्चे अन्य भाषाओं में भी उत्कृष्टता प्राप्त करते हैं और उनकी समग्र शैक्षिक उपलब्धि में वृद्धि होती है।

## 5. आर्थिक विकास

बहुभाषी समाजों में व्यापार और व्यवसाय के लिए विभिन्न भाषाओं का ज्ञान महत्वपूर्ण होता है। यह आर्थिक विकास को प्रोत्साहित करता है और वैश्विक बाजार में प्रतिस्पर्धा को बढ़ाता है।

- **अंतरराष्ट्रीय व्यापार:** विभिन्न भाषाओं का ज्ञान अंतरराष्ट्रीय व्यापार और व्यवसाय के लिए महत्वपूर्ण है। यह वैश्विक बाजार में सफल होने के लिए आवश्यक है।
- **स्थानीय व्यवसाय:** स्थानीय भाषाओं में व्यापारिक संचार स्थानीय बाजारों में सफलता के लिए महत्वपूर्ण है और यह स्थानीय अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करता है।

## 6. संवैधानिक और मानवाधिकार

भाषाई अधिकार और स्वतंत्रता मानवाधिकारों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। विभिन्न भाषाओं का संरक्षण और संवर्धन संवैधानिक अधिकारों की रक्षा करता है।

- **भाषाई अधिकार:** विभिन्न भाषाओं का संरक्षण और संवर्धन मानवाधिकारों की रक्षा करता है और विभिन्न भाषाई समुदायों को उनके अधिकारों से अवगत कराता है।
- **सरकारी नीतियां:** सरकारें भाषाई संरक्षण के लिए नीतियों का निर्माण करती हैं, जिससे भाषाई अधिकारों की सुरक्षा होती है और सामाजिक न्याय को बढ़ावा मिलता है।

भाषाई विविधता मानवता की एक अनमोल धरोहर है जो हमारे सांस्कृतिक, सामाजिक और आर्थिक जीवन को समृद्ध बनाती है। इसका संरक्षण और संवर्धन अत्यंत महत्वपूर्ण है। भाषाई विविधता के महत्व को समझकर और इसके संरक्षण के उपायों को अपनाकर हम अपनी सांस्कृतिक धरोहर को सुरक्षित रख सकते हैं और एक समृद्ध भविष्य की दिशा में कदम बढ़ा सकते हैं।

## विलुप्त होती भाषाएं

भाषाओं का विलुप्त होना एक गंभीर वैश्विक समस्या बन गई है। यूनाइटेड नेशंस एजुकेशनल, साइंटिफिक एंड कल्चरल ऑर्गनाइजेशन (यूनेस्को) के अनुसार, हर दो सप्ताह में एक भाषा विलुप्त हो जाती है। यह प्रक्रिया न केवल एक भाषा के निधन को दर्शाती है बल्कि उसके साथ जुड़े सांस्कृतिक, सामाजिक और ऐतिहासिक धरोहरों के नुकसान को भी इंगित करती है। भाषाओं के विलुप्त होने के कई कारण हैं, जिनमें वैश्वीकरण, शहरीकरण, शिक्षा और प्रशासन में प्रमुख भाषाओं का वर्चस्व, और प्रवासन शामिल हैं।

### 1. वैश्वीकरण

वैश्वीकरण ने कुछ प्रमुख भाषाओं का प्रभुत्व बढ़ाया है, जिससे स्थानीय भाषाओं का महत्व घट गया है।

- **प्रमुख भाषाओं का वर्चस्व:** वैश्वीकरण के कारण अंग्रेजी, चीनी, स्पेनिश जैसी भाषाओं का अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रभुत्व बढ़ गया है। व्यापार, विज्ञान, प्रौद्योगिकी और मीडिया में इन भाषाओं का उपयोग अधिक होता है, जिससे अन्य भाषाओं का महत्व घटता जा रहा है।
- **सांस्कृतिक एकरूपता:** वैश्वीकरण से सांस्कृतिक एकरूपता बढ़ती है, जिससे विभिन्न संस्कृतियों और भाषाओं की अनूठी पहचान खोने का खतरा बढ़ जाता है। यह विविधता के स्थान पर एकरूपता को बढ़ावा देता है।

## 2. शहरीकरण

शहरीकरण के साथ लोग अपनी स्थानीय भाषाओं को छोड़कर प्रमुख भाषाओं की ओर रुख करते हैं, जिससे स्थानीय भाषाओं का अस्तित्व खतरे में पड़ जाता है।

- **ग्रामीण से शहरी क्षेत्रों की ओर प्रवासन:** लोग बेहतर जीवनशैली और रोजगार के अवसरों की तलाश में ग्रामीण क्षेत्रों से शहरी क्षेत्रों की ओर प्रवास करते हैं। शहरी क्षेत्रों में प्रमुख भाषाओं का उपयोग अधिक होता है, जिससे स्थानीय भाषाएं कमजोर हो जाती हैं।
- **शहरीकरण का प्रभाव:** शहरीकरण के कारण लोग अपनी मातृभाषा छोड़कर प्रमुख भाषाओं को अपनाते हैं, जिससे उनकी मूल भाषाएं धीरे-धीरे लुप्त हो जाती हैं।

## 3. शिक्षा और प्रशासन

शिक्षा और प्रशासन में प्रमुख भाषाओं का प्रयोग होने से अन्य भाषाओं का उपयोग कम हो जाता है।

- **शिक्षा में प्रमुख भाषाओं का उपयोग:** अधिकांश शिक्षा प्रणालियों में प्रमुख भाषाओं का उपयोग किया जाता है। यह बच्चों को उनकी मातृभाषा से दूर कर देता है और प्रमुख भाषाओं की ओर ले जाता है।
- **प्रशासनिक कार्यों में प्रमुख भाषाओं का उपयोग:** सरकारी प्रशासन और व्यवसायिक कार्यों में प्रमुख भाषाओं का उपयोग होने से स्थानीय भाषाओं का महत्व घट जाता है और उनका उपयोग सीमित हो जाता है।

## 4. प्रवासन

प्रवासन के कारण लोग नई भाषाओं को अपनाते हैं और उनकी मातृभाषा विलुप्त हो जाती है।

- **प्रवासियों का भाषाई परिवर्तन:** प्रवासन के दौरान लोग नई भाषाओं को अपनाते हैं और उनकी मातृभाषा का उपयोग कम हो जाता है। यह विशेष रूप से तब होता है जब वे दूसरे देश या क्षेत्र में स्थायी रूप से बस जाते हैं।
- **भाषाई संक्रमण:** नए भाषाई वातावरण में लोग प्रमुख भाषा को अपनाते हैं, जिससे उनकी मातृभाषा कमजोर हो जाती है और धीरे-धीरे विलुप्त हो जाती है।

## 5. सामाजिक और आर्थिक दबाव

भाषाओं के विलुप्त होने में सामाजिक और आर्थिक दबाव भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

- **सामाजिक प्रतिष्ठा:** कुछ भाषाएं सामाजिक प्रतिष्ठा से जुड़ी होती हैं। लोग अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए प्रमुख भाषाओं को अपनाते हैं और अपनी मातृभाषा को छोड़ देते हैं।
- **आर्थिक अवसर:** प्रमुख भाषाओं का ज्ञान आर्थिक अवसरों को बढ़ाता है। लोग बेहतर रोजगार और आर्थिक अवसरों की तलाश में प्रमुख भाषाओं को सीखते हैं और अपनी मातृभाषा को छोड़ देते हैं।

### भाषाओं के संरक्षण और संवर्धन के उपाय

विलुप्त होती भाषाओं के संरक्षण और संवर्धन के लिए अनेक रणनीतियाँ अपनाई जा सकती हैं। इन निवारण उपायों का उद्देश्य भाषाई विविधता को बनाए रखना, भाषाओं के पुनरुत्थान को प्रोत्साहित करना और भाषाई अधिकारों की रक्षा करना है। भाषाओं के संरक्षण और संवर्धन के लिए कई उपाय किए जा सकते हैं:

#### 1. शिक्षा प्रणाली में सुधार

शिक्षा प्रणाली को सुधारने और स्थानीय भाषाओं को शामिल करने से भाषाओं के संरक्षण में महत्वपूर्ण योगदान हो सकता है।

- **मातृभाषा में प्रारंभिक शिक्षा:**
  - ❖ बच्चों को उनकी मातृभाषा में प्रारंभिक शिक्षा प्रदान करने से उनकी शैक्षिक क्षमता बढ़ती है और उनकी सांस्कृतिक पहचान मजबूत होती है।
  - ❖ **उदाहरण:** न्यूजीलैंड में, माओरी भाषा के पुनरुत्थान के लिए "कोहंगा रेओ" (माओरी भाषा के पूर्वस्कूल) स्थापित किए गए हैं।
- **बहुभाषी शिक्षा:**
  - ❖ शिक्षा प्रणाली में बहुभाषी दृष्टिकोण अपनाना चाहिए, जिसमें छात्रों को उनकी मातृभाषा के साथ-साथ राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय भाषाओं का भी ज्ञान दिया जाए।
  - ❖ **उदाहरण:** भारत में, त्रिभाषा सूत्र के तहत बच्चों को उनकी मातृभाषा, हिंदी, और अंग्रेजी सिखाई जाती है।

#### 2. सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन

सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से स्थानीय भाषाओं को बढ़ावा देना और संरक्षण करना महत्वपूर्ण है।

- **लोकगीत, नृत्य, और नाटक:**
  - ❖ स्थानीय भाषाओं में लोकगीत, नृत्य, और नाटक का प्रदर्शन करके लोगों में भाषाई जागरूकता और सम्मान को बढ़ावा दिया जा सकता है।

- ❖ **उदाहरण:** अफ्रीकी देशों में विभिन्न भाषाई और सांस्कृतिक त्योहारों का आयोजन होता है, जहां स्थानीय भाषाओं और सांस्कृतिक धरोहरों को प्रोत्साहित किया जाता है।

- **भाषाई प्रतियोगिताएं:**

- ❖ भाषाई प्रतियोगिताओं का आयोजन करके बच्चों और युवाओं को उनकी मातृभाषा में निपुणता प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया जा सकता है।
- ❖ **उदाहरण:** भारत में, विभिन्न राज्य स्तर पर भाषाई साहित्यिक प्रतियोगिताओं का आयोजन होता है।

### 3. सरकारी नीतियां और कानून

सरकारों को भाषाई संरक्षण के लिए प्रभावी नीतियां और कानून बनाना चाहिए।

- **आधिकारिक मान्यता:**

- ❖ सरकारों को स्थानीय भाषाओं को आधिकारिक रूप से मान्यता देनी चाहिए और उनके उपयोग को प्रोत्साहित करना चाहिए।
- ❖ **उदाहरण:** कनाडा में, फ्रेंच और अंग्रेजी दोनों को आधिकारिक भाषाएं मान्यता दी गई हैं, जिससे फ्रेंच भाषाई समुदाय की सांस्कृतिक धरोहर सुरक्षित रहती है।

- **भाषाई अधिकारों की रक्षा:**

- ❖ भाषाई अधिकारों की रक्षा के लिए कानून बनाना चाहिए, जिससे भाषाई समुदायों को उनके अधिकारों से अवगत कराया जा सके और उनकी रक्षा की जा सके।
- ❖ **उदाहरण:** भारतीय संविधान ने 22 भाषाओं को आधिकारिक दर्जा दिया है, जिससे इन भाषाओं का संरक्षण और संवर्धन सुनिश्चित होता है।

### 4. डिजिटल प्लेटफॉर्म पर सामग्री उपलब्ध कराना

डिजिटल युग में, स्थानीय भाषाओं के लिए सामग्री उपलब्ध कराना अत्यंत महत्वपूर्ण है।

- **ऑनलाइन संसाधन:**

- ❖ इंटरनेट पर स्थानीय भाषाओं में शैक्षिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक सामग्री उपलब्ध करानी चाहिए ताकि नई पीढ़ी उन भाषाओं को सीख सके।
- ❖ **उदाहरण:** कई भाषाई समुदाय अपने भाषाई धरोहर को सुरक्षित रखने के लिए ऑनलाइन डिक्शनरी, ई-पुस्तकें और शैक्षिक वेबसाइटें विकसित कर रहे हैं।

- **सोशल मीडिया और ऐप्स:**

- ❖ सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म और मोबाइल ऐप्स का उपयोग करके स्थानीय भाषाओं को प्रोत्साहित किया जा सकता है।

- ❖ **उदाहरण:** कई भाषाई समुदाय अपने भाषाई धरोहर को सुरक्षित रखने के लिए सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर समूह और पृष्ठ बना रहे हैं।

## 5. भाषाई जागरूकता अभियान

समुदायों में भाषाई जागरूकता अभियान चलाकर भाषाओं के महत्व और संरक्षण के तरीकों पर चर्चा की जा सकती है।

### • सार्वजनिक जागरूकता कार्यक्रम:

- ❖ समुदायों में भाषाई जागरूकता बढ़ाने के लिए कार्यशालाओं, संगोष्ठियों और सेमिनारों का आयोजन करना चाहिए।
- ❖ **उदाहरण:** भाषाई संस्थाएं और गैर-सरकारी संगठन (NGOs) भाषाई जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन करते हैं।

### • मीडिया और प्रेस का उपयोग:

- ❖ स्थानीय मीडिया और प्रेस के माध्यम से भाषाई जागरूकता अभियान चलाए जा सकते हैं।
- ❖ **उदाहरण:** टीवी, रेडियो, और समाचार पत्रों में स्थानीय भाषाओं को बढ़ावा देने के लिए विशेष कार्यक्रम और लेख प्रकाशित किए जा सकते हैं।

## 6. सामुदायिक भागीदारी

भाषाई संरक्षण में सामुदायिक भागीदारी अत्यंत महत्वपूर्ण है।

### • सामुदायिक भाषाई परियोजनाएं:

- ❖ स्थानीय समुदायों को अपनी भाषाओं के संरक्षण के लिए सक्रिय भूमिका निभाने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए।
- ❖ **उदाहरण:** सामुदायिक भाषाई परियोजनाओं में ग्राम स्तर पर भाषा शिक्षण कार्यक्रम, लोक साहित्य का संकलन और भाषा पुनरुत्थान अभियान शामिल हो सकते हैं।

### • भाषाई परिवार:

- ❖ परिवारों को उनकी मातृभाषा में बातचीत करने और अपनी भाषाई धरोहर को संजोने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।
- ❖ **उदाहरण:** परिवारिक मेलों और सभाओं में स्थानीय भाषाओं का उपयोग बढ़ावा दिया जा सकता है।

विलुप्त होती भाषाओं के संरक्षण और संवर्धन के लिए सामूहिक प्रयास आवश्यक हैं। शिक्षा प्रणाली में सुधार, सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन, सरकारी नीतियों का निर्माण, डिजिटल प्लेटफॉर्म पर सामग्री उपलब्ध कराना,



भाषाई जागरूकता अभियान, और सामुदायिक भागीदारी जैसे उपाय अपनाकर हम भाषाई धरोहर को सुरक्षित रख सकते हैं। इन उपायों के माध्यम से भाषाई विविधता को संरक्षित करना न केवल हमारी सांस्कृतिक धरोहर को सुरक्षित रखता है बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए एक समृद्ध विरासत भी छोड़ता है।

## निष्कर्ष

भाषाई विविधता मानवता की एक अमूल्य धरोहर है, जो हमारे सांस्कृतिक, सामाजिक, और आर्थिक जीवन को गहराई और समृद्धि प्रदान करती है। भाषाएं हमारे विचारों, भावनाओं, और अनुभवों को व्यक्त करने का माध्यम हैं और हमारी ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, और बौद्धिक धरोहरों को संरक्षित करती हैं। हालांकि, आज के तेजी से बदलते वैश्विक परिदृश्य में भाषाओं का विलुप्त होना एक गंभीर समस्या बन गया है। हर भाषा अपने आप में एक अनूठी सांस्कृतिक पहचान और ज्ञान का भंडार होती है, और इसके विलुप्त होने से न केवल उस भाषा के बोलने वाले समुदाय को नुकसान होता है, बल्कि पूरे मानव समाज की सांस्कृतिक धरोहर को भी खतरा होता है।

भाषाओं के विलुप्त होने के पीछे कई कारक हैं, जैसे वैश्वीकरण, शहरीकरण, शिक्षा और प्रशासन में प्रमुख भाषाओं का वर्चस्व, और प्रवासन। इन कारकों ने स्थानीय और अल्पसंख्यक भाषाओं के अस्तित्व को खतरे में डाल दिया है। प्रमुख भाषाओं का बढ़ता प्रभाव और स्थानीय भाषाओं के प्रति घटती संवेदनशीलता इन भाषाओं के धीरे-धीरे विलुप्त होने का कारण बन रही है।

इस गंभीर स्थिति का समाधान करने के लिए सामूहिक और समन्वित प्रयासों की आवश्यकता है। सबसे पहले, शिक्षा प्रणाली में सुधार करके स्थानीय भाषाओं को शामिल करना जरूरी है। बच्चों को उनकी मातृभाषा में प्रारंभिक शिक्षा देने से न केवल उनकी शैक्षिक प्रगति में सुधार होता है, बल्कि उनकी सांस्कृतिक पहचान भी मजबूत होती है। इसके अलावा, सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से स्थानीय भाषाओं को प्रोत्साहित करना आवश्यक है। लोकगीत, नृत्य, नाटक, और भाषाई प्रतियोगिताएं लोगों में भाषाई जागरूकता और सम्मान को बढ़ावा देती हैं।

सरकारी नीतियों और कानूनों का निर्माण भी एक महत्वपूर्ण कदम है। सरकारों को स्थानीय भाषाओं को आधिकारिक रूप से मान्यता देनी चाहिए और उनके संरक्षण के लिए प्रभावी नीतियां बनानी चाहिए। इसके अलावा, डिजिटल प्लेटफॉर्म पर स्थानीय भाषाओं के लिए सामग्री उपलब्ध कराना भी महत्वपूर्ण है। इंटरनेट पर शैक्षिक, सांस्कृतिक, और साहित्यिक सामग्री की उपलब्धता नई पीढ़ी को इन भाषाओं को सीखने और अपनाने के लिए प्रेरित करेगी। अंत में, भाषाई जागरूकता अभियान और सामुदायिक भागीदारी के माध्यम से भाषाओं के संरक्षण में सामुदायिक समर्थन जुटाना अत्यंत महत्वपूर्ण है। भाषाई संरक्षण के प्रयासों में समुदायों की सक्रिय भागीदारी से ही स्थानीय भाषाओं को संरक्षित और संवर्धित किया जा सकता है।

इस प्रकार, भाषाई विविधता के महत्व को समझना और इसके संरक्षण के उपायों को अपनाना न केवल हमारी सांस्कृतिक धरोहर को सुरक्षित रखता है, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए एक समृद्ध विरासत भी छोड़ता है। भाषाई संरक्षण और संवर्धन के सामूहिक प्रयासों से हम भाषाओं के विलुप्त होने की प्रक्रिया को रोक सकते हैं और अपने समाज को सांस्कृतिक रूप से समृद्ध बना सकते हैं।

## संदर्भ सूची

- यूनेस्को. (2010). *विश्व भाषाओं के संकट का आटलस*. (<http://www.unesco.org/culture/en/endangeredlanguages/atlas>).
- कृष्णन, एन. (2015). *भारतीय भाषाओं का समाजशास्त्र*. नई दिल्ली: साहित्य अकादमी.
- नेशनल ज्योग्राफिक सोसाइटी. (2007). *एंड्योरिंग वॉयसेस प्रोजेक्ट*. (<https://www.nationalgeographic.com/enduringvoices/>).
- मिश्रा, पी.एन. (2018). *भाषाई विविधता और भारतीय समाज*. वाराणसी: काशी हिंदू विश्वविद्यालय.
- क्रिस्टल, डेविड. (2000). *भाषा मौत*. कैम्ब्रिज: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस.
- ग्रेनोबल, एल. ए., और व्हेली, एल. जे. (संपा.). (2006). *खतरे में भाषाएँ: भाषा हानि और समुदाय की प्रतिक्रिया*. कैम्ब्रिज: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस.
- हैरिसन, केविन डी., और हुसैन, एस. आर. (संपा.). (2007). *खतरे में भाषाएँ और नई तकनीकें*. कैम्ब्रिज: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस.
- मुफ़वेने, एस. एस. (2001). *भाषा विकास की पारिस्थितिकी*. कैम्ब्रिज: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस.
- फिशमैन, जॉशुआ ए. (1991). *भाषा परिवर्तन को पलटना: खतरे में भाषाओं के सहायता के सिद्धांत और अभ्यास*. क्लेवेलैंड: मल्टीलिंगुअल मैटर्स.